IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिलाओं की सामाजिक असमानता को सामाजिक न्याय में बदलने के लिए पंचायत राज की भूमिका

पूजा सिंह,

शोधार्थिनी,

समाजशास्त्र विभाग,

राणा प्रताप पी. जी. कॉलेज सुल्तानपुर, (उत्तर प्रदेश)

डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

सुल्तानपुर, भारत

शोध सार

प्राचीन काल से महिलाओं के लिए असमानता एक गंभीर चुनौती के रूप में बनी हुई है भारत की 68.84 प्रतिशत आबादी यानी 833 मिलियन से अधिक लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं। भारत एक विकसित देश बनने का स्वर्णिम स्वप्न देख रहा है लेकिन ये तभी पूरा होगा जब देश के प्रत्येक स्तर का समान रूप से विकास हो। इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के असमानताओं को न्याय में परिवर्तित करने में पंचायत राज व्यवस्था किस प्रकार अपनी भूमिका निभा रहा है? तथा महिलाओं के असमानताओं का मुख्य कारण क्या है? इस पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया था इसके लिए ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध तथा प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया। जनपद सुल्तानपुर के जयसिंहपुर तहसील की 89 ग्राम सभा में 20 सहायक पंचायत महिला और 20 पंचायत समूह की महिलाओं का चयन यादृ च्छिक स्तरीकृत प्रतिचयन के द्वारा किया गया तथा अनुसूची तकनीकी का उपयोग किया गया। स्वतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद में कुछ वर्ग विशेष कर महिलाओं ने पग–पग पर असमानता देखी हैं इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए एक ऐसी तंत्र की आवश्यकता हुई जो इन भेदभावों को कम कर सके उसी तंत्र के रूप में पंचायत राज व्यवस्था एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है परिणाम स्वरूप ये प्राप्त हुआ कि महिलाओं से सम्बंधित असमानताओं का कारण शिक्षा, जागरूकता की कमी, समाज द्वारा स्त्री योग्यता को कम आंकना इत्यादि है पंचायत राज व्यवस्था महिलाओं से सम्बंधित भेदभाव को कम करने के लिए तथा जो सरकार के द्वारा महिला सशक्तिकरण से सम्बंधित योजनाएं चलाई जा रही हैं उसे जमीनी स्तर पर पूरा करने का कार्य कर रहा है।

मुख बिंदु

महिला, सामाजिक असमानता, सामाजिक न्याय, पंचायत राज व्यवस्था ।

परिचय

21वीं सदी में आज हमारा देश वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है किन्तु देश की 48 प्रतिशत आबादी अभी भी अनेक समस्याओं का सामना कर रही हैं और ये संख्या किसी और की नही बल्कि महिला वर्ग की है। महिलाओं का जीवन बहुपक्षीय होता है उनसे घर समाज परिवार देश आदि में योगदान की अपेक्षा भी की जाती है और स्त्रियां अपना सम्पूर्ण योगदान देती भी हैं किन्तु फिर समाज में लिंग भेदभाव क्यों बना हुआ है? यदि ध्यान से देखें तो वैदिक युग को छोड़कर स्त्रियों को हर एक युग में अपने अधिकार व सम्मान के लिए संघर्ष करना पड़ा है देश के एक हिस्से का विकास होना और दूसरे हिस्से का विकास न होना अपने आपमें एक गम्भीर समस्या बनकर उभर रही है। स्वतंत्रता के पहले महिला वर्गों ने बहुत असमानताओं का सामना किया है आज भी इन्हीं भेदभावों में यदि महिला वर्ग अपना जीवन व्यतीत कर रही है तो ऐसी स्वतंत्रता का क्या लाभ और ये भेदभाव व असमानता ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक दिखाई देती है क्योंकि यहाँ शिक्षा का अभाव है जिसके कारण अनेक कुरीतियां व कुप्रथाएं जन्म लेती हैं जिससे महिलाओं की स्थिति दयनीय हो जाती है इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए एक ऐसी तंत्र की आवश्यकता हुई जो इन भेदभावों को कम कर सके विशेष कर महिला वर्ग को न्याय दिला सके उसी तंत्र के रूप में पंचायत राज व्यवस्था की स्थापना 2 अक्टूबर 1959 में नागौर जिले के बगधरी गांव में तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के सम्पूर्ण विकास के उद्देश्य के साथ स्थापित किया गया ये व्यवस्था 1992 में और मजबूत हो गई जब 73वां व 74वां संविधान संशोधन हुआ जिससे महिलाओं को राजनीति के क्षेत्र में 33 प्रतिशत का आरक्षण दिया गया। आज महिलाएं राजनीति के क्षेत्र में बढ़ चढ़कर भागीदारी कर रही हैं किंतु कही न कहीं स्त्रियां अपने राजनीतिक क्षेत्रों को उत्कृष्ट रूप से नही सम्भाल पा रही हैं क्योंकि उनके मार्ग में कहीं समाज के बनाये गए प्रथाएँ परम्परा एंव समाज के कुछ हिस्सों की संकीर्ण मानसिकताएं तो कहीं उनके गृहस्थ से सम्बंधित जिम्मेदारियां कहीं शिक्षा का अभाव तो कहीं जागरूकता की कमी आ जाती है जिससे उनकी भागीदारी सिर्फ दस्तावेजों पर ही रह जाती है। आज 33 प्रतिशत आरक्षण को बढ़ा कर कई राज्यों में 50 प्रतिशत कर दिया गया है लेकिन ऐसे 50 प्रतिशत आरक्षण अवसर के रूप में तभी काम करेगा जब समाज के प्रत्येक व्यक्ति पूरी ईमानदारी और उत्तम मानसिकता के साथ काम करेगें और महिला वर्ग को भी अपने जिम्मेदारी व अधिकार के प्रति जागरूक होना पड़ेगा तभी समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है समानता एक बहुत मजबूत नींव है जिस पर किसी भी विकास की दीवारें खड़ी की जा सकती हैं।

शोध अध्ययन को छः अध्याय में विभाजित किया गया है प्रथम अध्याय में शोध का परिचय दिया गया है तथा दूसरे अध्याय में साहित्य समीक्षा की गई है तीसरे अध्याय में शोध उद्देश्य को बताया गया है तत्पश्चात चौथे अध्याय में विधि तंत्र व अकड़ा संग्रहण की विधियाँ बताई गई हैं तथा पांचवें अध्याय में विश्लेषण एवं परिणाम का अध्ययन किया गया तथा छठवें अध्याय में निष्कर्ष का वर्णन किया गया हैं।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

सदियों से सामाजिक असमानता पर किसी न किसी रूप में बहस होती आ रही है कभी आय को लेकर तो कभी लिंग को लेकर कभी सत्ता को लेकर तो कभी सामाजिक प्रस्थिति को लेकर, प्राचीन काल में देखा गया कि पद के शक्ति के लिए लोग एक दूसरे पर हावी रहते हैं और ऐसा भी समय आया जब समाज में अपने झूठे दिखावे की प्रतिष्ठा के लिए कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्राण तक ले लेता है और ये काम ज्यादातर अभिजात वर्ग या जिसके पास सत्ता की शक्ति रहती है वही करते हैं ये दृश्य कहीं न कहीं असमानता को दर्शाती है।(गैलब्रेथ, 2011) सामाजिक लोकतंत्र सामाजिक असमानता

को कम करने में बड़ा काम कर सकता है। पर क्यों नहीं कर रहा ? लोकतंत्र का अर्थ है जनता के द्वारा जनता के लिए जनता का शासन फिर असमानता क्यों ऐसे बहुत से प्रश्न है जिसके उत्तर मिलना अभी बाकी है।

महिलाओं के सामाजिक असमानताओं को न्याय में बदलने के लिए केवल उन्हें आर्थिक सुदृढ़ता की जरूरत नहीं है बल्कि उनके शैक्षिक सामाजिक राजनीतिक आदि क्षेत्रों में उनके स्थिति को मजबूत करना आवश्यक है महिलाओं को सशक्त करने का कार्य चल रहा है लेकिन इनकी गति बहुत धीमी है विशेष कर ग्रामीण क्षेत्रों में यहाँ महिलाओं के विकास का मार्ग पंचायत राज व्यवस्था के रूप में तो मिल गया है पर उस मार्ग में बहुत कठिनाइयां आ रही हैं। (कुमार, 2023) ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को एक तरह से कठपुतली बना दिया गया है वे राजनीति के क्षेत्र में कदम तो रख ली हैं किंतु उनके निर्णय उनके परिवार के पुरुष व उनके पुरुष मित्र लेते हैं एक रिपोर्ट से यह स्पष्ट होता है कि राजनीति के पद पर खड़ी हुई महिला पर नियंत्रण वही राजनीतिक व्यवस्था करता है जिसमें पुरुष वर्चस्व हो इससे स्त्रियां अपने प्रतिनिधित्व से वंचित रह जाती हैं। किन्तु कुछ वर्षों में पंचायत राज व्यवस्था के माध्यम से उनके विकास में परिवर्तन देखा गया वो घर से बाहर निकल रही हैं अपने कार्य को समझने और करने की कोशिश कर रही हैं ये कह सकते हैं कि महिलाओं को राजनीति स्तर पर एक तिहाई आरक्षण देकर उनके स्थिति को ऊंचा उठाने का प्रयास किया जा रहा है। कुमार, पांडे (2023) पंचायत राज व्यवस्था स्थानीय निकाय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। महिला भारत की आबादी का आधा हिस्सा है किन्तु उनके प्रतिनिधित्व की बात आती है तो किसी क्षेत्र में 10 प्रतिशत तो किसी क्षेत्र में 15 प्रतिशत ही देखी जाती है इतनी बड़ी अंतर या यूं कहें असमानता, किन्तु 1992 का 73वां संशोधन इस असमानता को काटने के लिए एक धारदार हथियार की तरह काम किया।

अध्ययन उद्देश्य

1. यह ज्ञात करना कि महिलाओं के प्रति असमानता का मुख्य कारण क्या है?

2. पंचायत राजव्यवस्था ग्रामीण क्षेत्र में विशेषकर महिलाओं से सम्बंधित असमानताओं को कम करने में क्या भूमिका निभा रहा है?

विधि तंत्र एवं अकड़ा संग्रहण

प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पर आधारित है शोध उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है प्राथमिक प्रदत्त का संकलन करने के लिए उत्तर प्रदेश के जनपद सुल्तानपुर के जयसिंहपुर तहसील की 89 ग्राम सभाओं में से 40 ग्राम सभा के पंचायत राज व्यवस्था में कार्यरत महिलाओं का चुनाव किया गया जिनमें से 20 सहायक पंचायत महिला और 20 पंचायत समूह की महिलाओं का चयन यादृच्छिक स्तरीकृत प्रतिचयन के द्वारा किया गया तथा चयन करने के पश्चात अनुसूची तकनीक का उपयोग किया गया है तथा द्वितीयक आकड़ों का संकलन करने के लिए प्रकाशित संसाधनों का उपयोग किया गया है जिसमें शोध पत्र पुस्तकें आदि सम्मिलित की गई हैं।

विश्लेषण एवं परिणाम

सारणी 1.1

क्रम संख्या	प्रश्न	उत्तरदात्रियां	
		हाँ	नहीं
1	क्या आप अपने अधिकार के प्रति जागरूक हैं?	22	18
2	क्या आपके घर में बालक और बालिकाओं को समान दृष्टि से देखा जाता है?	40	–
3	क्या आपके घर में कभी पुरुष भोजन बनाते हैं?	कभी–कभी 2	38
4	क्या राजनीति सिर्फ पुरुषों के लिए है?	–	40
5	क्या पितृसत्तात्मक सोच महिलाओं के विकास में बाधक बन रहा है?	35	5
6	क्या शिक्षा की कमी महिलाओं के असमानता का मुख्य कारण है?	29	11
7	क्या पंचायत राज व्यवस्था आपके और ग्रामीण क्षेत्रों के अन्य महिलाओं की विकास के लिए काम कर रहा है?	40	–
8	क्या पंचायत राज व्यवस्था की जो योजनाएं चल रही है वो पर्याप्त है ?	19	21
9	क्या पंचायत राज व्यवस्था के द्वारा राजनीति में प्रवेश करने के बाद परिवार में आपका स्थान उत्कृष्ट हुआ है?	32	8
10	क्या आप भविष्य में राजनीतिक के क्षेत्र में बनी रहना चाहती हैं	16	24

भारत का एक मानक आधार समानता है फिर भी महिलाओं के सामाजिक आर्थिक धार्मिक राजनीतिक सभी क्षेत्रों में असमानताएं प्रकट होते नजर आती हैं क्योंकि महिलाए स्वयं अपने अधिकार के प्रति सजग नही रहती उपर्युक्त प्रश्न संख्या 1 के अनुसार सिर्फ 22 महिलाएं अपने अधिकार के प्रति जागरूक हैं इनमें से 20 महिलाएं पंचायत सहायक के पद पर आसीन हैं जबकि 18 महिलाएं ऐसी हैं जिन्हें अपने अधिकार के बारे में पूर्णतः ज्ञान नहीं हैं। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 2 के

अनुसार सभी 40 उत्तरदात्रियों ने अपने परिवार में बालक और बालिकाओं के प्रति समान दृष्टिकोण रखने की बात की और इस बात का जिक्र किया कि जिस भेदभाव का सामना हमने किया है उसी भेदभाव का सामना हमारे बच्चे न करें। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 3 के अनुसार 2 महिलाओं ने इस प्रश्न के प्रति सकारात्मक विचार प्रकट किया लेकिन इस बात को साफ करते हुए बताया की जब कोई आकस्मिक काम या हमारा स्वास्थ्य ठीक नही रहता ऐसी स्थिति में वो भोजनालय के करीब जाते हैं जबकि 38 महिलाओं ने साफ तौर पर माना किया और बताया कि पुरुषों का भोजनालय में जाना उनके प्रतिष्ठा के खिलाफ लगता है। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 4 के अनुसार सभी उत्तरदात्रियों ने इस बात को स्वीकृत नही दिया कि राजनीति कोई लिंग आधारित कार्य है उत्तरदात्रियों का मानना है कि इसे कोई भी कर सकता है बस उसे अच्छी समझ और समाज के प्रति कुछ अच्छा करने का साफ नियत होना चाहिए। प्राचीन काल से हमारा समाज पितृसत्तात्मक समाज रहा है समाज के जितने भी मुख्य निर्णय है वो पुरुष ही लेते आ रहे हैं महिलाओं की भूमिका सिर्फ घर के अंदर ही देखी गई है प्रारम्भ में ये सब जीवन जीने का एक माध्यम समझा जाता था बाद में ये कब भेदभाव, शोषण में बदल गया ये अनुभव ही नही हुआ। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 5 के अनुसार 35 महिलाओं ने पितृसत्तात्मक सोच को एक बड़ा कारण बताया जिनमें 19 महिलाएं पंचायत समूह की तथा 16 महिलाएं सहायक पंचायत की थी जबकि 5 उत्तरदात्रियों ने पितृसत्तात्मक सोच को उतनी वरियता नही दी। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 6 के अनुसार 29 उत्तरदात्रियों ने शिक्षा को सामाजिक असमानता का मुख कारण माना उनका मानना है कि किसी क्षेत्र में समाज के द्वारा बनाये गए भेदभाव व असमानता को कम करने में हमारा शिक्षित होना परम आवश्यक है क्योंकि तभी हम अपने अधिकार के प्रति लड़ सकते हैं और अपना अधिकार ले भी सकते हैं। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 7 के अनुसार 40 उत्तरदात्रियों ने पंचायत राज व्यवस्था को महिलाओं के विकास का एक पुल बताया जिसके द्वारा महिलाएं घर के चारदिवारी से निकल कर राजनीति में प्रवेश कर पाई हैं। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 8 के अनुसार 19 उत्तरदात्रियों ने बताया कि जो योजनाएं ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए चल रही हैं वो पर्याप्त हैं जबकि 21 उत्तरदात्रियों ने बताया कि जो योजनाएं चल रही हैं वो तो पर्याप्त है किंतु उस योजना के प्रति जागरूकता का अभाव है जिसके कारण जो योजनाएं चल भी रही हैं उसके बारे में हमें पूर्णतः ज्ञान नही होता तो जब उस योजना के बारे में ज्ञान ही नही है तो हम उस योजना पर काम कैसे करेगें। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 9 के अनुसार 32 उत्तरदात्रियों ने बताया कि जब से हम इस पद के लिए कार्य कर रहें हैं तब से हमारी भी महत्वता बढ़ गई है लोग हमें भी सम्मान के दृष्टि से देखते हैं तथा हमारे निर्णय का भी सम्मान करते हैं जबकि 8 उत्तरदात्रियों ने बताया कि उनकी स्थिति पहले की तरह ही है उनसे उनके परिवार वाले ये अपेक्षा करते हैं कि पहले वो घर के सारे काम कर लें फिर अपने पद से सम्बंधित कार्य करे और जब ऐसा किसी दिन न हुआ तो घर में क्लेश की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उपर्युक्त प्रश्न संख्या 10 के अनुसार 16 उत्तरदात्रियों ने भविष्य में राजनीति में बने रहने की बात की और वर्तमान पद से ऊँचे पद प्राप्त करने की इच्छा भी जताई जबकि 24 उत्तरदात्रियों ने राजनीति के क्षेत्र में से बाहर निकलने की बात रखी और उसका कारण भ्रष्टाचार व समय पर वेतन न मिलना परिवारिक जिम्मेदारियां महिलाओं की योग्यता को कम आंकना इत्यादि की बात की।

परिणाम स्वरूप यह प्राप्त हुआ की महिलाओं के साथ असमानता और भेदभाव का मुख्य कारण शिक्षा की कमी जागरूकता का अभाव समाज की संकीर्ण मानसिकता एंव पितृसत्तात्मक सोच तथा अभिजात वर्गों की बाहुल्यता और स्वयं महिला वर्ग भी जिम्मेदार है। पंचायत राज व्यवस्था के 73वें संशोधन से समाज में व्याप्त इन असमानताओं को कम करने के लिए तथा महिलाओं के विकास के लिए जमीनी स्तर पर काम तो कर रहा है किन्तु विकास की दर बहुत धीमी है। आधुनिक समय में हम ये कहते हुए नजर तो आते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को समानता का अधिकार मिलना चाहिए किंतु वास्तविकता के पटल पर आकर देखें तो यथार्थ कुछ और नजर आता है आज हमारे समाज में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक इन सभी क्षेत्रों में स्थान तो मिलता है किन्तु उनके ज्यादातर काम दस्तावेजों पर ही रह

जाते हैं हम ये कह सकते हैं कि महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही हैं लेकिन अनुपात की बात की जाए तो हमें मौन होना पड़ता है।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक असमानता के मुख्य कारण को जानना और उन कारणों को जान कर पंचायत राज व्यवस्था सामाजिक असमानताओं को न्याय में किस प्रकार बदल रहा है। एक उत्कृष्ट अध्ययन करने के लिए 89 ग्राम सभाओं में से 40 ग्राम सभा के पंचायत राज व्यवस्था में कार्यरत महिलाओं का यादृच्छिक स्तरीकृत प्रतिचयन के द्वारा चयन किया गया तथा चयन करने के पश्चात अनुसूची तकनीक का उपयोग किया गया है तत्पश्चात इसके विश्लेषण और परिणाम की व्याख्या किया गया।

निष्कर्ष स्वरूप महिलाएं समाज की अभिन्न अंग हैं संविधान में महिलाओं को तो समान अधिकार दिये गए हैं किन्तु वे सिर्फ संवैधानिक दस्तावेजों पर ही देखे जा सकते हैं। हमारे समाज में महिलाओं के साथ जो असमानताएं हो रही हैं वो आज से नही बल्कि सदियों से होती आ रही हैं किंतु कुछ वर्षों से ही इस समस्या पर ज्यादा बल दे कर काम किया जा रहा है महिलाओं के साथ असमानता व भेदभाव को खत्म करने के लिए व असमानता को न्याय में बदलने के लिये हमें अपने संरचना में परिवर्तन करना होगा तब जा कर इस गम्भीर समस्या का अंत धीरे– धीरे हो सकता। अभी हाल के दिनों में हुआ राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार भारत की लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर 1020 महिला हैं इससे स्पष्ट होता है कि भारत की आधी आबादी महिलाओं की है इस हिसाब से महिलाओं की हर एक क्षेत्र में भागीदारी भी आधी होनी चाहिए किन्तु जिस गति से महिलाओं को समाज में योगदान देने का अवसर दिया जा रहा है उससे यह स्पष्ट होता है की अभी समाज में समानता लाने में लंबी दूरी तय करनी पड़ सकती है।

Reference

Galbraith, J. K. (2011). *Inequality and Economic and Political Change: a comparative Perspective.* Cambridge Journal of Regions, Economy and Society, 4(1), 13-27.

Iversen, T., Rosenbluth, F. M., & Rosenbluth, F. (2010). *Women, work, and politics: The political economy of gender inequality*. Yale University Press.

Kumar, M. A. (2023). Panchayati Raj and women's empowerment: an overview. *Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS) eISSN–2583-6986*, *2*(09), 54-59.

Kumar, V., & Pandey, S. K. (2023). *Womenin PanchayatiRaj System : IssuesandChallenges.* Journal of Research Administration, 5(2), 6649-6662.

Singh, p. (2024). *Panchayati Raj Mein GraminMahilaon Ka Yogdan Avam Chunautiyon: Samajashastriy Vishleshan.* International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR),11(1),Pp.867-884.

Singh, p. (2024). *Panchayati Raj AurSatat Vikas Mein Mahila Sashaktikaran Ki Bhumika Ka Samajashastriy Vishleshan (Uttar Pradesh Ke Janpad Sultanpur Ke Vishesh Sndarbh*

*Mein).*Institute For Social Development And Research. Ranchi:Gari Hotwar,15(1),Pp.123-133.

संकठा प्रसाद शुक्ला, जय नारायण सोनी. *महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति: राजनैतिक सशक्तिकरण के परिपेक्ष्य में (उमरिया जिले के विशेष सन्दर्भ में).*International Journal of Reviews and Research in Social Sciences 7.1 (2019): 139-146.

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation